पाठ 9. सच का इनाम

पाठ का परिचय

यह घटना गोपाल कृष्ण गोखले के बचपन की है। एक दिन उनके अध्यापक महोदय ने कक्षा में कुछ प्रश्न हल करने के लिए दिए। बालक गोपाल को उनमें से एक प्रश्न का उत्तर नहीं आता था। उसने उस प्रश्न को हल करने के लिए अपने सहपाठी की सहायता ली। जब स्कूल में सब बच्चों की कॉपी जाँची गई तो केवल गोपाल के ही सारे सवाल सही थे। अध्यापक महोदय प्रसन्न होकर गोपाल की खूब प्रशंसा करने लगे, लेकिन तभी बालक गोपाल उठ खड़ा हुआ और रोते-रोते कहने लगा कि उसने एक सहपाठी की सहायता से एक प्रश्न का हल लिखा है। अत: प्रशंसा उस सहपाठी की होनी चाहिए। अध्यापक महोदय बालक गोपाल की सच्चाई से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे जीवन में महान बनने का आशीर्वाद दिया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

सच बोलकर ही जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। हमेशा सच की ही जीत होती है। झूठ की राह मनुष्य को कुछ पलों के लिए चाहे उन्नति की राह पर आगे बढ़ा दे लेकिन झूठ की उम्र लंबी नहीं होती। सदैव सच बोलें और सच का ही साथ दें।

पाठ का वाचन

पहले पूरा पाठ स्वयं पढ़ें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। बच्चों के उच्चारण पर ध्यान दें। बीच-बीच में बच्चों से पाठ से संबंधित प्रश्न भी करते जाएँ जैसे–

- मास्टर जी ने बच्चों को क्या काम दिया?
- किसके सारे सवाल सही थे?

महत्वपूर्ण चर्चा

विभिन्न महापुरुषों के नाम बताकर कक्षा में चर्चा शुरू की जाए। जैसे – गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक। बच्चों से निम्न प्रश्न कर चर्चा आगे बढ़ाएँ।

- सभी बच्चों से पूछें कि सच बोलना किस-किस को अच्छा लगता है?
- क्या कभी किसी ने झूठ बोलकर कोई काम किया है? (सभी बच्चों से उनके जीवन की कोई ऐसी घटना सुनें जब उन्होंने झूठ बोला हो)

सभी को भविष्य में सच बोलकर जीवन जीने की प्रेरणा दें।